

दीपावली के दिन

करने योग्य श्रेष्ठ

जैन महालक्ष्मी विशिष्ट पूजन विधि

संकलन:~ J & V Jain



जैन विधि से जो करे, पूजन चित्त लगाए।
लाभ सवाया उसे मिले, घर में दिन-रात सुख पाए॥
आए लक्ष्मी उस घर में, जो महावीर नाम उचारे।
गौतम नाम स्मरण से, आनंद मन में पसारे॥

लक्ष्मी पूजन के लिए जरुरी सुचना

पूजा करने वाले स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहने ।

दाहिने हाथ में मौली (कलावा) बांधना ।

पालथी मारकर विनयपूर्वक बैठना चाहिए।

शुभ चौघड़िए में पहले एक अच्छी चौकी (बाजोट) पर थाली में लक्ष्मी जी की मूर्ति अथवा यंत्र को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर स्थापित करें।

कन्या द्वारा सभी पूजन करने वाले भाग्यशाली के मस्तक पर कुमकुम का तिलक लगाकर उस पर अक्षत (चावल) लगाए।

जिस चौकी पर लक्ष्मी जी की मूर्ति या यंत्र स्थापित किया गया हो, उसके दाहिनी ओर घी का दीपक और बाईं ओर धूप प्रज्वलित करें।

श्री महालक्ष्मीजी पूजन विधि

आह्वानं धनस्थापनं धनकनक करं धान्यस्थ संवर्धनम्
नालीकेर-सशर्करं घृतयुतं दुग्धैर्दधि स्थापनम्
जाती चन्दन मिश्र-केशर छटा-पंचामृतैः पूजनम्
लक्ष्मी स्नानकरं सुवस्त्राभरणं दिव्यांगाना भूषणम्॥

सर्वप्रथम २७ बार श्री नवकार मंत्र बोलें।
श्री महावीर स्वामी तथा गौतम स्वामी की स्तुति बोलें।
तत्पश्चात आत्मरक्षा मंत्र विधिपूर्वक बोलकर नीचे दी गई विधि आरंभ करें।

आह्वान मंत्र

आह्वान मुद्रा

ॐ औँ क्रौँ महालक्ष्मी ! चंद्रमुखि ! सौभाग्यदायिनि ! अक्षय भांडागार भर पूराण ! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुखसंपत्तिं कुरु कुरु अत्र आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

स्थापन मंत्र

(आह्वान मुद्रा की हथेलियों को नीचे की ओर करने से यह मुद्रा बनती है)

ॐ औँ क्रौँ महालक्ष्मी ! चंद्रमुखि ! सौभाग्यदायिनि ! अक्षय भांडागार भर पूराण ! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुखसंपत्तिं कुरु कुरु अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

संनिधान मंत्र

(दोनों हाथों की मुट्ठी बांधकर आपस में मिलाएं और दोनों अँगूठों को ऊपर सीधा रखें)

ॐ औँ क्रौँ महालक्ष्मी ! चंद्रमुखि ! सौभाग्यदायिनि !
अक्षय भांडागार भर पूराण ! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुखसंपत्तिं कुरु कुरु
अत्र पुजा बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

इस प्रकार से श्री महालक्ष्मी देवी की स्थापना करने के बाद महापूजन की विधि नीचे दिए गए मंत्रोच्चार द्वारा करें

पंचामृत पूजा

ॐ ह्रीँ श्रीँ भगवत्यै सर्वलोकस्य जनन्यै तप्त-कांचनं वर्णाभ्यायै पद्मासन
संस्थितायै श्री लक्ष्मी महादेव्यै पंचामृतं समर्पयामि स्वाहाः।

(पंचामृत से सूक्ष्म छिड़काव करे।)

गंध पूजाः

ॐ ह्रीँ श्रीँ भगवत्यै सर्वलोकस्य जनन्यै तप्त-कांचनं वर्णाभ्यायै पद्मासन
संस्थितायै श्री लक्ष्मी महादेव्यै गन्ध गृहाण गृहाण स्वाहाः।

पुष्प पूजा

ॐ ह्रीँ श्रीँ भगवत्यै सर्वलोकस्य जनन्यै तप्त-कांचनं वर्णाभ्यायै पद्मासन
संस्थितायै श्री लक्ष्मी महादेव्यै पुष्पाणि समर्पयामि स्वाहाः।

धूपदीप पूजा

ॐ ह्रीँ श्रीँ भगवत्यै सर्वलोकस्य जनन्यै तप्त-कांचनं वर्णाभ्यायै पद्मासन संस्थितायै श्री लक्ष्मी महादेव्यै धूपंदिपं गृहाण गृहाण स्वाहाः।

अक्षत पूजा

ॐ ह्रीँ श्रीँ भगवत्यै सर्वलोकस्य जनन्यै तप्त-कांचनं वर्णाभ्यायै पद्मासन संस्थितायै श्री लक्ष्मी महादेव्यै अक्षतान् गृहाण गृहाण स्वाहाः।

नैवेद्य पूजाः

ॐ ह्रीँ श्रीँ भगवत्यै सर्वलोकस्य जनन्यै तप्त-कांचनं वर्णाभ्यायै पद्मासन संस्थितायै श्री लक्ष्मी महादेव्यै नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहाः

फल पूजा

ॐ ह्रीँ श्रीँ भगवत्यै सर्वलोकस्य जनन्यै तप्त-कांचनं वर्णाभ्यायै पद्मासन संस्थितायै श्री लक्ष्मी महादेव्यै फलानि समर्पयामि स्वाहाः

अर्घ्य पूजा

ॐ ह्रीँ श्रीँ भगवत्यै सर्वलोकस्य जनन्यै तप्त-कांचनं वर्णाभ्यायै पद्मासन संस्थितायै श्री लक्ष्मी महादेव्यै अर्घ्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण स्वाहाः।

पुष्पांजलि (प्रक्षेप करें):

शान्तिः शान्तिकरः स्वामी शान्तिधारां प्रवर्षति
सर्व लोकस्य शान्त्यर्थं शान्तिधारां करोम्यहम्
जाति चम्पक पालाद्यै र्मोगरैः पारिजातिकैः
यजमानस्य सौख्यार्थं सर्वविघ्नोपशान्तये॥

श्री महालक्ष्मी अष्टक

ॐ नीर निर्मल सुगंध चंदन अखंड अक्षत पुष्पजं,
दीपधूप नैवेद्य पंच घृत शर्करायुत फलादिकं;
पूजा भव्य शिवसुखदायक दुरित कल्मषखंडण,
श्री महालक्ष्मी महामाया पूजायां प्रतिगृह्यतां।
ॐ नमोऽस्तु महामाया, सुरासुर प्रपूज्यते;
शंख चक्र गदा हस्ते, महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।
जन्मादि रहितो देवी, आदि शक्ति अगोचरे;
योगिनी योग-संभूते, महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।
पद्मे वनारसि देवी, पद्म जिह्वा सरस्वती;
पद्म हस्ते जगन्नाथो, महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।

सर्वज्ञ सर्वदं देवी, सर्व दुःख निवारिणी;
पूर्व सिद्धि करो देवी, महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।
स्थूलो सूक्ष्मो महारौद्रे, सत्येसत्य महोदरी;
महापापहरो देवी, महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।
सिद्धि बुद्धिप्रदादेवी, भक्ति मुक्ति दायिनी;
मित्र हस्ते महादेवी, महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।
लक्ष्मी स्तवनं पुण्यं, प्रातरुत्थाय यः पठेत्;
दुःख दारिद्रयं न पश्यंति, राज्यं प्राप्नोति नित्य सः॥

अष्टक बोलकर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख रखकर धूप-दीप करके एकाग्र चित्त से नीचे दिए गए मंत्र की 5 माला फेरें:

ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ श्रीँ भगवती महालक्ष्म्यै श्रीँ श्रीँ श्रीँ ह्रीँ नमः

माला फेरने के बाद नीचे दिए अनुसार बोलकर विधि में जाने-अनजाने हुए दोष के लिए क्षमा याचना करें और देवी के स्थान का विसर्जन करें

क्षमा याचना

ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मंत्रहीनं च यत्कृतम्,
तत्सर्वं क्षम्यतां देवी, प्रसाद परमेश्वरी॥ १ ॥
आह्वानं नैव जानामि न जानामि विसर्जनम्,
पूजां विधिं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वरी॥ २ ॥
अपराध सहस्त्राणि क्रियन्ते नित्याशो मया,
तत्सर्वं क्षम्यतां देवी, प्रसाद परमेश्वरी॥ ३ ॥

क्षमा याचना के बाद गरीबों और याचकों को दान दें

इति महालक्ष्मी पूजन विधि

